उपसंहार एवं मूल्यांकन

तुलसीदास ने अपनी मानस में जिन आदर्शों की स्थापन ाकरने के उद्देश्य से इसी की रचना की थी उसमें वे पूरी तरह से सफल हुए हैं । उन्होने रामचरित मानस में राजनीति संस्कृति नीति सभी का समावेश बड़ी कुशलता से किया है और उनकी इस विशे,ता ही की वजह से मानस आज भी लोकप्रिय है ।

भक्तियुगीन काव्य के अन्तर्गत राम-कथा की एक सुविस्तृत परम्परा मिलती है । जैसा कि इस परम्परा के मुख्य पोषकों के उपर्युक्त परिचय से स्पष्ट हो जाता है । यह काव्य-धारा मुख्य रुप से मर्यादा, माधुर्य, दास्य, सख्य तथा अन्य अनेक रुपों में राम-भक्ति की निरुपक है। इस काव्य-प्रवृत्ति पर प्राचीन युगों में लिखे गये संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के साहित्य का भी व्यापक प्रभाव है । यह इसकी वैचारिक प्राचीनता का भी द्योतन करता है । इस प्रवत्ति के प्रसार में असंख्य कवियों ने योगदान दिया जिनमें गोस्वामी तुलसीदास जैसे महान् भक्तकवि भी है । रामकाव्य में कथात्मक तत्वों के सुनियोजित समावेश के अतिरिक्त अध्यात्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण से भी अनेक विशेषताएं मिलती है । रामचन्द्र को कवियों ने परब्रह्म परमेश्वर ही माना है जो चार रुपों में अयोध्या में अवतीर्ण हुए थे । राम के चरित्र में शील, शक्ति, और सौन्दर्य का जो अद्भुत समन्वय भक्तकवियों ने निर्दिष्ट किया, वह ब्रह्मस्वरुप ही है । जिस प्रकार से प्रकृति और पुरुष की सत्ता होती है उसी प्रकार से सीता भी परमपुरुष राम से अपृथक् उन्हीं की शक्ति के एक रुप में मान्य की गयी हैं । राम और सीता दोनों ही एक तत्व होकर विराट ओंकार स्वरुप हैं । तुलसीदास जी ने सीता और राम की वंदना करते हुए उनकी अभेदता के विषय में यह लिखा है कि जिस प्रकार से वाणी और अर्थ में तथा जल और लहर में पृथकत्व नहीं होता है उसी प्रकार से सीता और राम भी एकही हैं । रामभक्त कवियों के अतिरिक्त कृष्णभक्त कवियों ने भी राम-कथा का समावेश अपने काव्य में किया है । सगुण भक्ति के औचित्य का निर्देश भी सूरदास ने किया है सगुण भक्ति इसलिए

सामान्य भक्तों के लिए बोधगम्य है क्योंकि निगुर्ण अथवा अनन्त वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता है । उसे रुप, रेखा, गुण, जाति अथवा वर्क से भी समझा नहीं जा सकता । इसीलिए सामान्य भक्त सगुण रुप का आश्रय चाहता है । तुलसीदास ने राम और उनके भाइयों को शक्तिशील और सौन्दर्य । अनन्त कोष बताया है । वे चारों कठोर और मृदु दोनों होते हुए धर्म, अर्थ और मोक्ष की निवास भूमि हैं । तुलसीदास ने भी रामकथा के अन्तर्गत आध्यातिमक और दार्शनिक तत्वों का निरुपण किया है । ब्रह्म को उन्होने अखंड, अद्वैत, अरुप, अविनाशी, निर्विकार, मायारहित और अनन्त माना है । सगुण दृष्टिकोण से उन्होने उसकी कल्पना सच्चिदानन्द् रुप में की है । उन्होने स्पष्टतः यह घोषित किया है कि निर्गुण और सगुण में कोई अन्तर नहीं है । निर्गुण स्वरुप ही प्रेम-भावना से युक्त भक्ति के कारण सगुण बन जाता है । ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार से जल शीत के कारण हिम बन जाता है । सगुण रुप की उपासना का तुलसीदास ने अनुगमन किया । मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के चरित्र में उन्होने निर्गुण और सगुण दोनों की निहित बताते हुए उन्हें विष्णु का अवतार बताया है । राम के नाम की भी उन्होने असाधारण महिमा प्रतिपादित की। ब्रह्म की शक्ति के रुप में माया का भी विवेचन तुलसीदास ने किया। इसी प्रकार जीव-मुक्ति, भक्ति तथा ज्ञान आदि का निरुपण भी उन्होने राम-कथा के विभिन्न सन्दर्भों में किया है । इस प्रकार से यह स्पष्ट हो जाता है कि राम-काव्य की परम्परा न केवल भारतीय साहित्य में वरन् विदेशी साहित्य में भी अत्यधिक प्रशस्त है । उसका प्रसार अतती युगों में सहस्रों वर्षो तक है और वर्तमान काल तक वह अजस्र रुप में प्रवाहशील मिलता है।

इन कवियों ने रामाकाव्य धारा में न केवल साहित्यिक योगदान दिया है अपितु यह निरन्तर समाज के साथ जुड़े रहे और समाज को सुसंस्कृत बनाने में निरन्तर प्रयास करते रहे । जिसे हम भूल नहीं सकते ।

तुलसी साहित्य में संस्कृति व राजनीति दोनों का ही समन्वय करते हुए उन्होने दोनों ही को भक्ति के आवरण में लपेटकर प्रस्तुत किया है तुलसी दासजी के बारे में यह कहना अनुचित होगा कि वे केवल भक्त कवि है यह उनके राजनैतिक ज्ञान का अनादर करना होगा । तुलसीने अपने आपको भक्त के स्थान पर जरुर रखा है पर केवल भक्ति करना ही उनका उद्देश्य नहीं था । उन्होने वैदिककाल से चली आ रही रामकाव्य परम्परा को आधार बनाकर अपने मानस के माध्धम से उसको एक नवीन व स्थायी स्थान प्रदान किया है। तुलसीने हर वर्ग के लोगों के लिए उनके अनुकूल पचरित्रों का चित्रण किया है । उनकी मानस में हमें हर सम्बन्ध का आदर्श स्वरुप दिखाई देता है तुलसी के मानस में हम समाज राजनीति व संस्कृति सभी को एक दूसरे में इसी प्रकार गुन्था हुआ पाते हैं कि जिससे एक सुन्दर माला का निर्माण हो गया है जो वे अपने आराध्य देव श्री राम के चरणों में समर्पित कर देते हैं । तुलसीने अपने साहित्य में जिस रामराज्य का वर्णन किया है वर्तमान समय में उसी की आवश्यकता हमें महसूस होती है तुलसीने अपने रामचरित मानस में जितने भी चरित्रों को गढा है वे सब सजीव होकर हमारी आंखों में घूमने लगते हैं कही भी बनावटीपन नहीं दिखाई देता है । तुलसी चूंकि भावुक हृदय थे उन्होने अपने आसपास के लोगों में भी निष्छलता का आरोपण किया है शबरी अपने प्रेम में यह भूल जाती है कि वह जूठे बेर खिला रही है । केवट यह नहीं समझ पाता है कि वह किसके बाते कर रहा है । नगरपुर वासी कैकेयी की बुराई करते समय .ह भूल गये हैं कि वह भरत की माता व राजमाता है तुलसी ने जिस पृष्ठभूमि क ोदेखा उसी को माध्यम नाकर मानस में रख दिया अतः जो कुछ भी तुलसीने राम चरित मानस में लिखा था वह यथार्थ से दूर नहीं था । तुलसीने सदैव अनीति करने वालों को दण्डित करवाया यह उस तुलसीकालीन परिस्थितियोंनुसार उचित ही था । मानस में तुलसीदासने संस्कृति के उसी विराट स्वरुप का परिचय दिया है जोकि पांच हजार साल पुरानी है तुलसी अपनी इस प्राचीन धरोहर को कैसे विकृत होने देते । तुलसीने प्राचीन राम कथाओं को आधारमान करके रचना

की है इसे स्वीकारा भी है पर उनकी रचना अन्य रामायणकालीन रचनाओं की तरह मंदिरो की शोभा नहीं बढ़ा रही है वह तो लोगों की दैनिक दिनचर्या का एक हिस्सा बन चुकी है । तुलसी के राम में गंभीरता है लक्ष्मण में क्रोध व सेवाभाव है भरत में त्याग है शत्रुघ्न में क्रोध व सेवा दोनों ही है । सीता साक्षात लक्ष्मी का अवतार होने के बावजूद वनवन नंगे पैर चलती है अपनी पति परायणता से लोगों के आगे आदर्श रुप में प्रस्तुत होती है । अशोक वाटिका में एक पेड़ के नीचे सर्दी गर्मी वर्षो का कष्ट उठाती है । तुलसीने उन मुगल कालीन नारियों के समक्ष एक आदर्श नारी के रुप में उनकी प्रतिष्ठा की है । कौशल्या सुमित्रा के रुप में अपने निज स्वार्थों को त्यागने वाली माता का आदर्श स्वरुप प्रस्तुत किया है । शूर्पणखा के माध्यम से नारियों को. संयम की सलाह दी है । विभीषण व सुग्रीव दोनों ही के माध्यम से तुलसीने आपसी फूट में घर उजड़ते हैं इसे सिद्ध करने का प्रयास किया है, और सदैव नीति का साथ देना चाहिए इसको स्पष्ट किया है ।

तुलसी ने अपने साहित्य की रचना जिस काल में की थी वह वाल्मीकि तरह से राम कालीन न था उन्होने तो हर ओर अराजकता ही देखी थी विषम परिस्थिती में इतनी सुन्दर सहज ढंग से इतने महान ग्रन्थ की रचना करना बड़ा ही कठिन कार्य है । हनुमान जी के माध्यम से स्वामी भक्ति से अधिक कुछ नहीं होता है ऐसा स्पष्ट किया है रावण कुम्भकरण मारीच सुबहु त्रिशला खरदूषन आदि के माध्यम से अनीति का अन्त बुरा ही होगा इसे स्पष्ट किया है । राम राज्य के माध्यम से जनता को कैसे आचरण करना इशका ज्ञान दिया है ।

इस प्रकार तुलसीने वेदों, आगम, पुराणों रामायणों सभी ग्रन्थों से प्रेरणा लेकर अपने अनुपम ग्रन्थ मानस की रचना की है । उन्होंने अपने राजा राम की चारित्रिक विशेषता में बलवान होने का सबूत धनुषभंग के अवसर पर ही देदिया है व रावण आदि को भी पूर्ण

चुनौती देदी है । इस प्रकार तुलसीने अच्छे राजा के क्रिया कलापों को दुष्ट राजा के क्रिया कलापों को दोनों प्रखार की प्रजाओं को चित्रित करते हुए अन्त में राम राज्य की स्थापना कर मानस का उद्देश्य पूर्ण किया है ।